

ALL RIGHTS RESERVED © جميع حقوق الطبع محفوظة

First Edition: May 2003

© مكتبة دارالسلام، ١٤٢٤  
فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

آل الشيخ، صالح بن عبدالعزيز

غاية المرید فی شرح کتاب التوحید، / صالح بن عبدالعزيز آل الشيخ - الرياض، ١٤٢٤ هـ

٢٥٦ ص ٢١×١٤ سم

ردمك: ٨-٣٢-٨٩٢-٩٩٦٠

(النص باللغة الهندية)

١- التوحید ٢- العقيدة الاسلامية أ- العنوان

١٤٢٤/٩٦٩

ديوي: ٢٤٠

رقم الإيداع: ١٤٢٤/٩٦٩

ردمك: ٨-٣٢-٨٩٢-٩٩٦٠

Headoffice: P.O. Box: 22743, Riyadh 11416 K.S.A.

Tel: 00966-01-4033962/4043432 Fax: 4021659

E-mail: darussalam@naseej.com.sa Website: www.dar-us-salam.com

K.S.A. Darussalam Showrooms  
Riyadh

• Tel: 00966-1-4614483 Fax: 4644945

Jeddah

• Tel: 00966-2-6879254 Fax: 6336270

Al-Khobar

• Tel: 00966-3-8692900 Fax: 00966-3-8691551

U.A.E

• Darussalam, Sharjah U.A.E

Tel: 00971-6-5632623 Fax: 5632624

PAKISTAN

• Darussalam, 32 B Lower Mall, Lahore

Tel: 0092-42-724 0024 Fax: 7354072

U.S.A

• Darussalam, Houston

P.O. Box: 79194 Tx 772779

Tel: 001-713-722 0419 Fax: 001-713-722 0431

E-mail: sales@dar-us-salam.com

• Darussalam, New York

572 Atlantic Ave, Brooklyn

New York-11217, Tel: 001-718-625 5925

U.K

• Darussalam International Publications Ltd.

226 High Street, Walthamstow,

London E17 7JH, Tel: 0044-208 520 2666

Mobile: 0044-794 730 6706

Fax: 0044-208 521 7645

• Darussalam International Publications  
Limited

Regent Park Mosque, 146 Park Road,  
London NW8 7RG Tel: 0044-207 724 3363

• Darussalam

398-400 Coventry Road, Small Heath  
Birmingham, B10 0UF

Tel: 0121 77204792 Fax: 0121 772 4345

E-mail: info@darussalamuk.com

Web: www.darussalamuk.com

MALAYSIA

• E&D Books SDN. BHD.-321 B 3rd Floor,

Suria Klcc

Kuala Lumpur City Center 50088

Tel: 00603-21663433 Fax: 459 72032

SINGAPORE

• Muslim Converts Association of Singapore

32 Onan Road The Galaxy Singapore- 424484

Tel: 0065-440 6924, 348 8344 Fax: 440 6724

SRI LANKA

• Darul Kitab 6, Nimal Road, Colombo-4

Tel: 0094-1-589 038 Fax: 0094-74 722433

KUWAIT

• Islam Presentation Committee

Enlightment Book Shop

P.O. Box: 1613, Safat 13017 Kuwait

Tel: 00965-244 7526, Fax: 240 0057

غاية المرید فی شرح کتاب التوحید

# گایاتول مورید شہر کیتاوت تہید

تالیف

فضيلة الشيخ صالح بن عبد العزيز بن محمد بن إبراهيم آل الشيخ  
سালেہ بن ابڊول اڃریڃ بن موممڊ بن إبراهیم آلے شےخ  
مন্ত্রী اسلامیك বিষয় एवं औकाफ दावत व इरशाद सऊदी अरब

انوادک

موممڊ تاهیر سلفی



داروسلام  
پرکاشک एवं ویتارک  
ریاڊ- سऊदी ارب

## विषय सूची

भूमिका और कुछ महत्वपूर्ण परिभाषायें .....	03
तौहीद (एकेश्वरवाद) के विषय में .....	09
तौहीद की प्रधानता और यह कि वह पापों को मिटा देती है .....	16
जो वास्तविक तौहीद रखेगा बिना हिसाब के स्वर्ग में प्रवेश पायेगा .....	21
शिरक (मिश्रण) से डरने का विषय .....	27
ला इलाहा इल्लल्लाह का आमंत्रण देने का विषय .....	32
तौहीद (अद्वैत) तथा ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही देने का अर्थ .....	35
आपत्ति के निवारण के लिए कड़ा तथा धागा आदि पहनना शिरक है .....	44
यंत्रों तथा मंत्रों के विषय में .....	50
जो पेड़ पत्थर आदि से शुभ प्राप्त करता हो .....	55
अल्लाह के सिवाय किसी अन्य के लिए बलि देने के विषय में .....	64
जिस स्थान में अल्लाह के सिवाय के लिए बलि दी जाये वहाँ अल्लाह के लिए बलि न दी जाये .....	70
अल्लाह के सिवाय के लिए मनौती शिरक है .....	74
अल्लाह के सिवाय से शरण चाहना शिरक है .....	76
अल्लाह के सिवाय से गुहार करना या दुआ करना शिरक है .....	77
अल्लाह का कथन "कि क्या वह उसे अल्लाह का साझी बनाते हैं जो कुछ बना ही नहीं सकते" .....	83
अध्याय .....	89
शफाअत (अभिस्तावना) का विषय .....	94
अल्लाह का कथन "आप उसे मार्गदर्शन नहीं दे सकते जिसे चाहते हों" .....	100
इस बात का वर्णन कि इंसानों के अधर्म तथा धर्म त्याग का कारण	

सदाचारियों के सम्बन्ध में अत्यधिक है .....	104
जब किसी धर्माचारी की समाधि के पास अल्लाह की इबादत घोर पाप है तो उसकी पूजा करना कितना बड़ा पाप होगा .....	110
धर्माचारियों की समाधियों के सम्बन्ध में अति उसे अल्लाह के सिवाय पूज्य मूर्ति बना देती है .....	117
मुस्तफा ﷺ ने तौहीद (अद्वैत) की चारदीवारी की रक्षा कैसे की तथा शिरक तक पहुँचने के मार्ग को कैसे बंद किया .....	120
इस उम्मत के कुछ लोग मूर्तियाँ पूजेंगे .....	123
जादू के विषय में .....	130
जादू के कुछ भेदों का वर्णन .....	134
काहिनों आदि के विषय में .....	135
जादू उतारने के विषय में .....	142
शगुन लेने के विषय में .....	144
ज्योतिष का अध्याय .....	145
नक्षत्रों से वर्षा होने पर विश्वास .....	149
अध्याय .....	154
अध्याय .....	159
अध्याय .....	162
अध्याय .....	164
इस बात का वर्णन कि अल्लाह पर ईमान में भाग्य संतोष भी है .....	166
पाखण्ड (दिखावा) का वर्णन .....	170
इंसान का अपने पुण्यकर्म से दुनिया चाहना शिरक है .....	173
यह विषय कि जिस ने विद्वानों तथा प्रशासकों की आज्ञापालन वैध को निषेध तथा निषेध को वैध करने में की उसने उसको प्रभू बना दिया .....	176
अध्याय .....	179
जो अल्लाह के किसी नाम और विशेषणों का इंकार करता है .....	182
अध्याय .....	184
अध्याय .....	186

जो अल्लाह की कसम खाने पर संतुष्ट न हो.....	१९०
जो अल्लाह चाहे तथा जो तुम चाहो बोलने का विषय.....	१९२
जिसने युग को अपशब्द कहा उसने अल्लाह को पीड़ा दी.....	१९५
न्यायकारियों का न्यायकारी आदि नाम रखना.....	१९७
अल्लाह के नामों का आदर तथा उसके लिए नाम बदल देना.....	१९९
जो किसी ऐसी वस्तु का उपहास उड़ाये जिस में अल्लाह की, कुरआन की और रसूल की बात हो.....	२०१
अध्याय.....	२०३
अध्याय.....	२०९
अध्याय.....	२१२
अल्लाह पर सलाम कहने का निषेध.....	२१४
हे अल्लाह यदि तू चाहे तो क्षमा कर दे कहना.....	२१६
दास तथा दासी नहीं कहना चाहिए.....	२१८
जो अल्लाह के नाम पर मांगे उसे फेरा न जाये.....	२२०
अल्लाह को प्रसन्न करके स्वर्ग की मांग करनी चाहिए.....	२२२
"लौ" (यदि) के विषय में.....	२२३
वायु को गाली देने से निषेध.....	२२५
अध्याय.....	२२७
भाग्य के इंकार का विषय.....	२३०
चित्रकारों के विषय में.....	२३४
अधिक कसम (शपथ) खाने का विषय.....	२३७
अल्लाह तथा उस के नबी की जिम्मेदारी के विषय में.....	२४०
अल्लाह पर शपथ लेने का विषय.....	२४४
अल्लाह की सिफारिश किसी के पास न ले जानी चाहिए.....	२४६
नबी ﷺ का तौहीद की रक्षा करना तथा शिर्क के द्वार बंद करना.....	२४८
अध्याय.....	२५०

## भूमिका और कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ

तौहीद के विद्वानों की इस बात पर सहमति है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) के विषय में किताबुत तौहीद जैसी किताब इस्लाम में नहीं लिखी गई, यह किताब इस विषय की ओर आमन्त्रण देती है, इसलिए कि शैख -मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब (رحمته الله) ने इसमें तौहीद की तर्कों के सिद्धान्त, तौहीद का अर्थ और उसकी श्रेष्ठता बयान की है, उसके अतिरिक्त एकेश्वरवाद के विपरीत वस्तुओं और उनसे बचाव के कारणों का भी वर्णन है, इसी प्रकार संक्षिप्त रूप से तौहीद इबादत (केवल एक अकेले अल्लाह को पूजना) और अल्लाह के नामों एवं विशेषताओं में उसको अकेला समझने का भी बयान है, छोटे एवं बड़े शिर्क, उसकी रूप-रेखा, उसके कारणों एवं साधनों का भी वर्णन है।

तौहीद की सुरक्षा और उसके साधनों एवं उसके कुछ भेदों का भी विवरण दे दिया है, चूँकि यह एक महान पुस्तक है इसलिए उसे पढ़ने, याद करने और उसके पाठों में विचार करके उसका सम्मान करना चाहिए, इस प्रकार आप जहाँ कहीं रहेंगे उसकी आवश्यकता आप को रहेगी।

### किताबुत तौहीद

तौहीद से अभिप्राय किसी वस्तु को इकट्ठा करना है "وَحْدَ الْمُسْلِمُونَ اللَّه" का अर्थ है : "मुसलमानों ने अल्लाह तआला को एक अकेला पूज्य माना।"

अल्लाह तआला की किताब में तौहीद से अभिप्राय उसके निम्नलिखित तीन प्रकार है:

१. तौहीद रुबूबियत (अल्लाह अकेला प्रभु है)
२. तौहीद उलूहियत (अल्लाह अकेला पूज्य है)
३. तौहीद अस्मा व सिफात (अल्लाह अपने नामों एवं विशेषताओं में अकेला है, उस जैसा कोई नहीं)

तौहीद रुबूबियत: उसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला को उसके कार्यों में एक और अकेला मानना, अल्लाह के कार्य बहुत हैं, उन में कुछ यह है: पैदा करना, जीविका देना, जीवन एवं मृत्यु देना। इन सभी चीजों में वह पूर्णरूप से एक और अकेला है।



**तौहीद उलूहियत:** उसका अर्थ यह है कि वह पूज्य जिसकी प्रेम और सम्मान के साथ पूजा की जाये, अर्थात् सेवकों के कार्यों को केवल अल्लाह तआला के लिए विशेष करना।

**तौहीद अस्मा व सिफात:** उसका अर्थ यह है कि बन्दा यह विश्वास रखे कि अल्लाह तआला अपने नामों एवं विशेषताओं में अकेला है, उन नामों और विशेषताओं में कोई उसके समान नहीं।

लेखक رحمۃ اللہ علیہ ने इस किताब में तौहीद के उपरोक्त तीनों भेदों का वर्णन किया है और उन भेदों में बन्दों को जिस भेद की अधिक आवश्यकता है, चूँकि उस में ज्यादा किताबें नहीं पाई जाती इसलिए उस को विस्तारपूर्वक बयान किया है, वह तौहीद इबादत अथवा तौहीद उलूहियत है, अतः उसके स्तम्भ जैसे भरोसा, डर और प्रेम आदि की व्याख्या की है और इसके विपरीत जो शिर्क है उसको भी बयान किया है। शिर्क यह है कि अल्लाह के एकेश्वरवाद होने उसके अकेले पूज्य होने, या उसके नामों एवं विशेषताओं में उसके साथ अन्य को साझी बनाया जाये, इस किताब के लिखने का उद्देश्य भी यही है कि इबादत में अल्लाह तआला के साथ किसी को साझी मानने से रोकना और केवल उसी की इबादत का आदेश देना।

कुरआन व हदीस से प्रमाणित तर्क इस बात को बतलाते हैं कि शिर्क दो प्रकार के हैं: १. बड़ा २. छोटा और एक एतबार से उसके तीन प्रकार हैं: १. बड़ा शिर्क २. छोटा शिर्क ३. छिपा शिर्क

**बड़ा शिर्क :** वह है जिसके करने से बन्दा धर्म से निष्कासित हो जाता है, उसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला के साथ अन्य की भी पूजा की जाये अथवा इबादत में से कुछ अल्लाह के अतिरिक्त की ओर फेर दिया जाये, अथवा इबादत में अल्लाह तआला के साथ किसी को उसका साझी माना जाये।

**छोटा शिर्क :** वह है जिस पर धर्मशास्त्र ने शिर्क का आदेश लगाया है, परन्तु उसमें किसी को पूर्ण साझीदार नहीं माना जाता जो उसको बड़े शिर्क के साथ मिला दे।

यह स्पष्ट रहे कि बड़ा शिर्क प्रत्यक्ष भी है जैसे मूर्तियों, मजारों, मृतकों के पूजकों का शिर्क, और अप्रत्यक्ष भी, जैसे मुनाफिकों का शिर्क, या विद्वानों, मृतकों और झूठे पूज्यों पर भरोसा करने वालों का शिर्क। यह शिर्क छिपा है और छिपी स्थिति में यह बड़ा है, जाहिर में नहीं। इसके अतिरिक्त कड़े, धागे और यन्त्र आदि पहनना, अल्लाह के अन्य की सौगन्ध खाना भी छोटे शिर्क में सम्मिलित है।

**छिपा शिर्क:** इससे तात्पर्य छोटे प्रकार के दिखावे और इसी तरह की अन्य वृत्तियाँ हैं।

## तौहीद (एकेश्वरवाद के विषय में)

अल्लाह का कथन है :

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ﴾

और मैंने जिन्नों तथा इंसानों को मात्र अपनी इबादत (उपासना) के लिए पैदा किया।<sup>1</sup> (सूरतुज-जजारियात: ५६)

तथा उसका कहना है कि:

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾

निश्चय हम ने प्रत्येक समुदाय में दूत भेजा कि अल्लाह की इबादत (उपासना) करो और अवैज्ञाकारी से बचो।<sup>2</sup> (सूरतुन-नहल: ३६)

तथा उसका कहना है :

<sup>1</sup> मैंने मानव और जिन्नों को केवल अपनी उपासना के लिए पैदा किया। असलाफ (सहाबा, ताबईन आदि) ने (لِيَعْبُدُونِ) की व्याख्या (لِيُوحِدُونِ) से की है, अर्थात् मैंने जिन्नों और इंसानों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरे एकेश्वरवाद का इकरार और प्रसार करें।

इस से यह भी ज्ञात हुआ कि प्रत्येक ईशदूत "तौहीद इबादत" को समझाने के लिए भेजे गये थे।

<sup>2</sup> यह आयत इबादत (उपासना) और तौहीद (एकेश्वरवाद) के अर्थ का विवरण है, इस से यह भी मालूम हुआ कि सारे रसूल और अम्बिया उपरोक्त दो बातों की शिक्षा के लिए भेजे गये, प्रथम अल्लाह की उपासना करो, द्वितीय तागूत (झूठे पूज्य) की उपासना से दूर रहो, इसी को तौहीद कहते हैं। इस आयत के प्रथम भाग (وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ) में तौहीद का इकरार और दूसरे भाग (اعْبُدُوا اللَّهَ) में शिर्क (बहुदेववाद) का इकार है।

﴿وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا يَٰهٗ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَنِ﴾

तेरे पालनहार ने निर्णय कर दिया है कि मात्र उसी की इबादत (उपासना) करो तथा माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो।<sup>1</sup> (सूरतुल इस्रा: २३)

अल्लाह का कथन है :

﴿قُلْ تَعَالَوْا أَنزِلْ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا﴾

कह दो, आओ मैं तुम्हें वह पढ़कर सुना दूँ जिसे तुम्हारे पालनहार ने हARAM कर दिया है कि उसके साथ किसी वस्तु को साझी न बनाओ। (सूरतुल अनआम: १५१)

तथा उसका कथन है कि:

﴿وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا﴾

और अल्लाह की इबादत (वंदना) करो और उसके साथ किसी वस्तु का मिश्रण न करो।<sup>2</sup> (सूरतुल निसा: ३६)

इब्ने मसऊद ने कहा:

जो मुहम्मद ﷺ की उस वसीयत को देखना चाहे जिस पर आप की मुहर लगी है वह अल्लाह तआला का वचन पढ़े।

<sup>1</sup> इस आयत में फ़ैसला से तात्पर्य आदेश और वसीयत है, अर्थात् उसने तुम्हें इस बात का आदेश दिया है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी की इबादत न करो, कलमये तौहीद (لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ) का भी यही अर्थ है, यह आम तौहीद के अर्थ को पूरी तरह प्रकट कर रही है।

<sup>2</sup> यह आयत इस बात को सिद्ध करती है कि प्रत्येक प्रकार का शिर्क (बहुदेववाद) वर्जित है चाहे वह बड़ा हो, छोटा हो या छिपा हुआ हो, इससे यह भी ज्ञात हुआ कि किसी फ़रिश्ता, नबी, नेक बन्दा, पत्थर, वृक्ष जिन्न आदि को अल्लाह तआला के साथ साझीदार बनाना उचित नहीं है।

﴿قُلْ تَعَالَوْا أَنزِلْ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَنِ﴾

कह दो आओ मैं तुम्हारे सामने वह बात पढ़कर सुनाऊँ जिसे तुम्हारे पालनहार ने तुम पर हARAM कर दिया है: कि अल्लाह के साथ किसी वस्तु का मिश्रण न करो तथा माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। (सूरतुल अनआम: १५१)

उसके इस वचन तक :

﴿وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ﴾

तथा निश्चय यही मेरा सीधा मार्ग है। तो तुम उसका अनुसरण करो अन्य मार्गों पर न चलो।<sup>1</sup> (सूरतुल अनआम: १५३)

और मुआज बिन जबल ने कहा:

«كُنْتُ رَدِيفَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى حِمَارٍ فَقَالَ لِي: يَا مُعَاذُ، أَتَذَرِي مَا حَقَّ اللَّهُ عَلَى الْعِبَادِ وَحَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللَّهِ؟ قُلْتُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ حَقُّ اللَّهِ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَعْبُدُوهُ وَلَا يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا.

<sup>1</sup> यहाँ वसीयत से तात्पर्य शास्त्रिक वसीयत है, अल्लाह तआला की वसीयत का अर्थ यह होता है कि वह आदेश अनिवार्य और आवश्यक है, यह आयत उपरोक्त आयतों की भाँति तौहीद के अर्थ को बतलाती है।

इब्ने मसऊद के कथन का मतलब यह है कि यदि मान लिया जाये कि रसूल ﷺ ने कोई वसीयत लिख कर उस पर अपनी मुहर लगाई जिसे आप के देहान्त के पश्चात् खोला गया तो आप की वसीयत यही आयतें होंगी जिनमें यह बातें लिखी हैं।

इब्ने मसऊद की यह हदीस उन आयतों की सर्वश्रेष्ठता और उच्चता को बतलाती है जिनका आरम्भ शिर्क के इन्कार से हुआ है। इससे यह सिद्ध हुआ कि तौहीद का इन्कार और शिर्क का इन्कार सर्वप्रथम और सब से श्रेष्ठ है।

तथा पवित्र अल्लाह ने इन विषयों की प्रधानता पर अपने इस कथन से हमें सावधान किया है : यही वह हिक्मत (तत्व-दर्शिता) की बातें हैं जो अल्लाह ने तेरी ओर प्रकाशना की हैं।

१२- निधन के समय रसूलुल्लाह ﷺ की वसीयत का वर्णन ।

१३- बंदों पर अल्लाह के हक़ का परिचय ।

१४- बंदों के लिए अल्लाह का हक क्या है जब कि वे उसका हक अदा करें।

१५- इस बात को बहुत से सहाबा नहीं जानते थे ।

१६- ज्ञान छिपाने का औचित्य किसी अच्छाई के लिए ।

१७- मुसलमानों को ऐसे इल्म की शुभ सूचना देना जिससे वह प्रसन्न हों।

१८- अल्लाह की असीम दया पर भरोसा कर लेने से भय ।

१९- जिससे ऐसी चीज का प्रश्न किया जाये जिसे वह न जानता हो उसे कहना चाहिए कि अल्लाह तथा उसके रसूल बेहतर जानते हैं।

२०- विशेष व्यक्ति को कोई खास बात बताना उचित है।

२२- अपने पीछे दूसरे को सवारी के जानवर पर सवार करने का औचित्य ।

२३- मुआज़ बिन जबल की श्रेष्ठता ।

२४- तौहीद के विषय की महत्ता ।



## तौहीद की प्रधानता और यह कि वह पापों को मिटा देती है

अल्लाह तआला का कथन है :

﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ﴾

जो लोग ईमान लाये तथा अपने ईमान का घोलमेल शिर्क (बहुदेववाद) से नहीं किया<sup>1</sup> उन्हीं के लिए शान्ति है तथा वही सत्य मार्ग पर हैं<sup>2</sup> (सूरतुल अनआम: ८२)

<sup>1</sup> अर्थात् जो भक्त तौहीद के विषय में जितना पक्का और मजबूत होगा वह तदानुसार स्वर्ग में प्रवेश का अधिकारी होगा, उसके कर्म चाहे जैसे हों, इसीलिए इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब ने सूरह अन्आम की उपरोक्त आयत का विवरण किया है।

<sup>2</sup> अत्याचार का अर्थ : इस आयत में जुल्म (अत्याचार) से तात्पर्य शिर्क है, जैसाकि अब्दुल्लाह बिन मसऊद र.अ. ने बयान किया है कि नबी स.अ. के सहचरों (सहाबा) ने इस आयत को अपने लिए बहुत बड़ा बोझ और कठिन समझा तो उन्होंने कहा : हे अल्लाह के रसूल ! हम में से कौन है जिसने स्वयं पर अत्याचार न किया हो ? आप ने फरमाया, उसका अर्थ वह नहीं जो तुम समझते हो, बल्कि यहाँ "जुल्म" से तात्पर्य शिर्क है। (सहीह बुखारी हदीस ४७७६) क्या तुम ने अल्लाह के नेक बन्दे (हजरत लुकमान) का यह कथन नहीं सुना :

﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

"शिर्क बहुत बड़ा जुल्म (अत्याचार) है।" (सूरह लुकमान: १३)

इसलिए जुल्म से तात्पर्य शिर्क के आधार पर आयत का अनुवाद यह हुआ कि :

उबादह बिन सामित ने कहा कि रसूलुल्लाह स.अ. ने फरमाया:

«مَنْ شَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَأَنَّ عِيسَى عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ وَكَلِمَتُهُ أَلْفَاهَا إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ: أَدْخَلَهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ عَلَىٰ مَا كَانَ مِنَ الْعَمَلِ».

[जो इकरार कर ले कि एक अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य नहीं, उसका कोई साझी नहीं, तथा यह कि मुहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं और यह कि ईसा अल्लाह के बंदे तथा उसके रसूल हैं और उसका आदेश है जिसे उसने मरियम की ओर डाला तथा उसकी रूह है। स्वर्ग सत्य है एवं नरक सत्य है। (अल्लाह) उसे स्वर्ग में प्रवेश देगा। चाहे उसके कर्म कैसे भी हों।<sup>1</sup> (बुखारी तथा मुस्लिम)]

बुखारी तथा मुस्लिम में इतबान की हदीस में है कि :

«فَإِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى النَّارِ مَنْ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَتَّبِعِي بِذَلِكَ وَجْهَ

اللَّهُ».

[जिसने अल्लाह की प्रसन्नता के लिए, ला इलाहा इल्लल्लाह कहा, अल्लाह ने उसे नरक पर हराम (वर्जित) कर दिया।<sup>2</sup>]

जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने अपने ईमान (विश्वास) को शिर्क से लतपत नहीं किया, उनके लिए (अल्लाह के यहाँ परलोक में) शान्ति है और वही लोग सीधे मार्ग पर हैं।

अतः जो व्यक्ति ईमान लाया अर्थात् तौहीद को अपनाया, और उस तौहीद को शिर्क से नहीं मिलाया, उसके लिए पूर्ण मार्गदर्शन है।

<sup>1</sup> अर्थात् वह व्यक्ति कर्मानुसार कितना ही हीन क्यों न हो, और उसके कर्मपत्र में कितने पाप क्यों न हों अल्लाह अन्त में उसे स्वर्ग में अवश्य प्रवेश करेगा, यह तौहीद वालों के लिए तौहीद के लाभों में से एक लाभ है।

<sup>2</sup> यही वाक्य "ला इलाहा इल्लल्लाह" तौहीद का सूत्र है, इस सूत्र को अल्लाह तआला